ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 10 कुल पृष्ठ-8 6 से 12 फरवरी, 2020 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 मा. शु.-11

आर्य समाज नारसन कलां, जिला-हरिद्वार, उत्तराखण्ड के वार्षिक समारोह में गोरक्षा का लिया गया संकल्प

देश में गोहत्या एवं गोमांस निर्यात पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाये

- स्वामी आर्यवेश

धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड से राष्ट्र का नैतिक पतन होता है

- स्वामी यज्ञमुनि

गत दिनांक 2, 3 एवं 4 फरवरी, 2020 को आर्य समाज नारसन कलां, जिला–हरिद्वार, उत्तराखण्ड का वार्षिकोत्सव धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य संन्यासी स्वामी यज्ञमुनि जी, उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गोविन्द्र सिंह भण्डारी एडवोकेट, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् उत्तराखण्ड के प्रधान डॉ. वीरेन्द्र पंवार, मिशन आर्यावर्त यूट्यूब चैनल के निदेशक ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, आचार्य विजयपाल, ब्र. गौतम आर्य गुरुकुल कांगड़ी, श्री रामनिवास आर्य भजनोपदेशक, श्रीमती संगीता आर्या आदि संन्यासी, विद्वान एवं भजनोपदेशकों ने जनता का मार्ग दर्शन किया।

4 फरवरी, 2020 को उत्सव में सम्मिलित हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में गोहत्या व गोमांस निर्यात पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की मांग की। उन्होंने कहा कि यह विडम्बना की बात है कि भारत में आज गोवंश, अपमानित एवं तिरस्कृत किया जा रहा है। एक तरफ लाखों गाय, बछड़े एवं बैल कत्लखानों में काटे जा रहे हैं, उनका मांस एवं खून डब्बों में बन्द करके विदेशों में निर्यात किया जा रहा है। दूसरी ओर हर गाँव व शहर में हजारों बछड़े व बैल दर–दर की ठोकरें खा रहे हैं तथा कूड़े के ढेर पर पड़ी प्लास्टिक पोलोथिन की थैलियाँ खा–खाकर असमय मौत का शिकार होते हैं। ऐसी स्थिति में आर्य समाज ने पूरे देश में गोरक्षा महा अभियान चलाने का महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया है। महा अभियान के अन्तर्गत आर्य समाज की ओर से जगह–जगह सम्मेलन, संगोष्ठियाँ व जन–चेतना यात्राओं का आयोजन किया जा रहा है। सरकार से मांग की जाती है कि अविलम्ब गोहत्या एवं गोमांस निर्यात पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाकर गोवंश की सुरक्षा एवं संवर्धन की राष्ट्र को गारण्टी दे। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र एवं योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र के देश में गोवंश का हो रहा ह्रास पूरे देश के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है। स्वामी आर्यवेश जी ने देश की जनता का आह्वान किया है कि वे अपने घर में कम से एक गाय अवश्य पालें। यदि वे अपने घर में गाय नहीं रख सकते तो किसी गरीब व्यक्ति के घर गाय रखकर उसका खर्चा स्वयं उठायें। स्वामी आर्यवेश जी ने इस तर्क को सिरे से नकार दिया कि दूध न देने वाली गाय तथा बछड़े व बैल अनुपयोगी हैं। उन्हें कोई क्यों पाले। स्वामी जी ने कहा कि गाय, बछड़े और बैल कभी अनुपयोगी नहीं हो सकते, उनके गोबर और गोमूत्र से यह कृषि प्रधान देश जीरो बजट की खेती कर सकता है। गाय के गोबर और गोमूत्र से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। फसल को खराब करने वाले कीड़े समाप्त हो जाते हैं और उत्पादन पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह निष्कर्ष गुरुकुल कुरुक्षेत्र में किये जा रहे परीक्षण के आधार पर सामने आया है। विदित हो कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने इस परीक्षण का परिणाम सारे देश के समक्ष इस दावे के साथ किया है कि एक गाय से 20 एकड़ जमीन पर जीरो बजट अर्थात् बिना विशेष खर्च के खेती की जा सकती है। स्वामी आर्यवेश जी ने किसानों को गाय पालने के लिए विशेष रियायत देने की मांग की। उन्होंने कहा कि जब मछली पालन, मुर्गी पालन, छींगा पालन एवं सूअर पालन के लिए सरकार अनुदान एवं सहायता देती है तो गाय के लिए विशेष सहायता एवं अनुदान की व्यवस्था क्यों नहीं हो सकती। स्वामी आर्यवेश जी ने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग की। इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी पारित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे स्वामी यज्ञमुनि जी ने बढ़ते हुए धार्मिक पाखण्ड पर आक्रमक टिप्पणी करते हुए कहा कि मूर्ति पूजा तथा अन्धविश्वास से राष्ट्र का नैतिक पतन होता है। अतः धार्मिक अन्धविश्वास के खिलाफ आर्य समाज अपना प्रचण्ड अभियान चला रहा है।

उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी ने सब पापों की जननी शराब के विरुद्ध अपना ओजस्वी उद्बोधन दिया और सरकार से मांग की कि पूरे देश में एक साथ शराबबन्दी लागू की जाये। उन्होंने कहा कि शराब के कारण देश के गरीब किसान एवं मजदूर तथा नौजवान बर्वाद हो रहे हैं। शराब से जहाँ अधिकतर दुर्घटनाएं, झगड़े एवं मुकदमें तथा महिलाओं पर हो रहे अत्याचार बढ़ रहे हैं, वहीं आर्थिक एवं शारीरिक रूप से भी लोग प्रभावित हो रहे हैं। उत्सव में पारित प्रस्ताव के माध्यम से मांग की गई कि देश में गोहत्या एवं गोमांस निर्यात, शराब एवं नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या एवं टेलीविजन, गूगल व अश्लील साहित्य के द्वारा परोसी जा रही अश्लील सामग्री पर प्रतिबन्ध लगाया जाये और पूरे राष्ट्र को गोहत्या मुक्त, नशामुक्त, कन्या भ्रूण हत्या मुक्त एवं चारित्रिक पतन से मुक्त किया जा सके। कार्यक्रम के अन्त में आर्य समाज के पदाधिकारियों ने स्वामी आर्यवेश जी व अन्य सभी विद्वानों का शॉल, स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया। सम्मान करने वालों में वीतराग संन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी महाराज, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक डॉ. सुमन्त सिंह आर्य, आर्य समाज नारसंन कला के संरक्षक श्री आनन्द स्वरूप वर्मा, प्रधान श्री यशपाल सिंह राठी, मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह राठी, कोषाध्यक्ष श्री सुभाष राठी, संयोजक मा. आजाद सिंह राठी, जिलासभा के पूर्व प्रधान श्री हाकम सिंह आर्यवंशी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के छाया प्रधान श्री मानपाल सिंह आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री मानपाल सिंह आर्य ने आर्य समाज की ओर से स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी यज्ञमुनि जी, ब्र. दीक्षेन्द्र जी व अन्य सभी विद्वान व भजनोपदेशकों का धन्यवाद ज्ञापित किया और गोरक्षा महा अभियान में आर्य समाज नारसंन कलां तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड की ओर से पूर्ण सहयोग की घोषणा की।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

18 फरवरी जन्मदिवस पर विशेष

सामाजिक सुधार, राष्ट्र निर्माण, मानव निर्माण व वेद प्रचार हेतु सम्पूर्ण जीवन अर्पित करने वाले

युग दृष्टा, युग सृष्टा महर्षि दयानन्द जी को शत-शत नमन्

एक व्यक्ति के रूप में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत में फैली मिथ्या धारणाओं, पाखण्डों तथा सामाजिक कुरीतियों के विरोध में अनुपम संघर्ष किया। किसी भी प्रकार के भय से आतंकित नहीं हुए, कोई भी प्रलोभन उन्हें सत्य कथन एवं सत्याचरण से रोक नहीं पाया। किन्तु उन्होंने यह अनुभव किया कि बिना किसी संगठन के वह अपने सत्य संदेश को समग्र भारत अथवा विश्व में विस्तार से नहीं दोहरा पायेंगे। अतः उन्होंने चैत्र प्रतिपदा सम्वत् 1931 को मुम्बई नगर में एकसंस्था की स्थापना की जिसका नामकरण किया गया 'आर्य समाज'। आर्य समाज के प्रमुख दस नियम निर्धारित किए गए जो आर्य समाज के लक्ष्य भी हैं और उनकी प्राप्ति के उपाय भी। वे साधन भी हैं तथा साध्य भी। ये नियमोंपनियम ही अपने आप में क्रांति का बिगुल हैं।

कुछ व्यक्ति नियमोंपनियमों का अवलोकन करके ही पीछे हट जाते हैं। किन्तु आर्य समाज पिछले 140 वर्ष से अधिक समय से इन्हीं लक्ष्यों को क्रियान्वित करने के लिए कार्यरत हैं।

आर्य समाज अपनी शक्ति सामर्थ्य और साधनों का उपयोग करते हुए आगे बढ़ रहा है वैचारिक क्रान्ति सारे संसार में लाने का प्रयास कर रहा है, प्रभु शक्ति देवे।

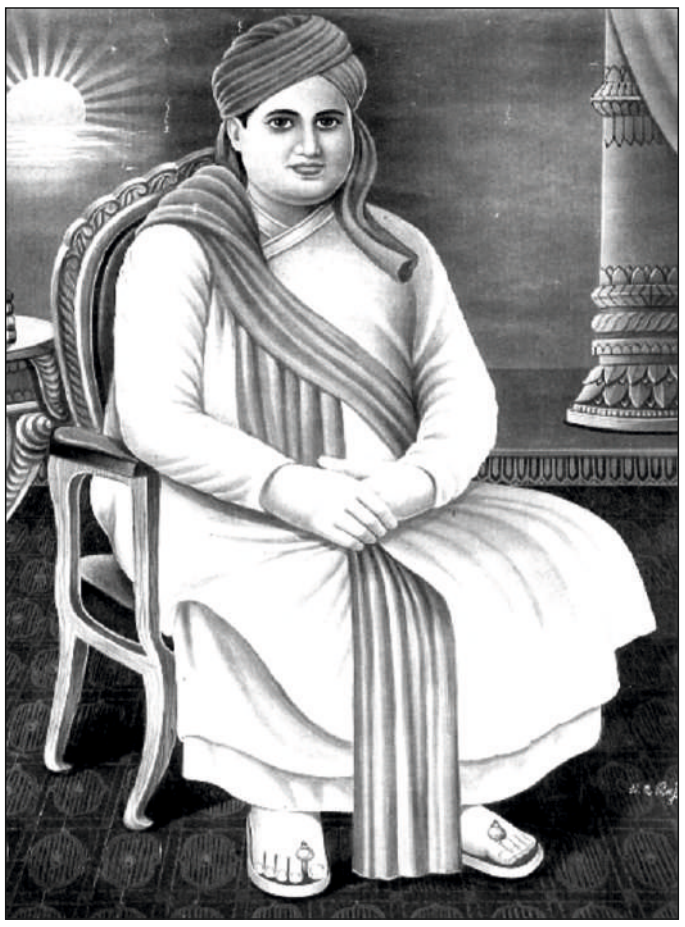

1. आर्य : महर्षि दयानन्द जी के उपदेश व संदेशानुसार सबसे पहले उद्घोषित किया कि हम सब भारतीय आर्य हैं, हिन्दु नाम तो विदेशी लोगों ने चिढ़के रूप में हमें दिया है हमारे सभी ग्रन्थों में हमारा या हमारे पूर्वज भी श्री राम, श्री कृष्ण आदि सभी आर्य हैं और इस देश का सबसे प्राचीन ऐतिहासिक नाम आर्यव्रत है, बाद में भारतवर्ष है।

2. वेदों की ओर लौटो : आर्य समाज का आधार और मुख्य कार्य वेद और वेदज्ञान का प्रचार व प्रसार है। वेद के आधार पर प्रभु का मुख्य नाम ओ३म् है। प्रभु निराकार सर्वव्यापक सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान है अपने सभी कार्य प्रभु अपने सामर्थ्य से ही करने में सफल है। वह कभी अवतार बन कर जन्म मरण के बन्धन और सीमाओं में नहीं बंधता।

भगवान की काल्पनिक (झूठी) मूर्ति बनाना और मोक्ष के लिए उसको पूजना प्रार्थना करना अवैदिक है, अज्ञान है क्योंकि मूर्ति तो जड़ पदार्थों से बनी है जो न तो सुन सकती है, न चल सकती है। देखना और बातें करना तो दूर। इसका प्रभाव है कि अब मूर्ति पूजक पौराणिक भी वह आस्था व श्रद्धा नहीं रखते हैं औपचारिकता पूरी करते हैं।

3. यज्ञ : आर्य समाज मानव मात्र ही नहीं, प्राणी मात्र की भलाई के लिए पवित्र वेद की ऋचाओं (मन्त्रों) द्वारा, शुद्ध सामग्री, घी व सामग्री के द्वारा प्राण के आधार वायु को शुद्ध करता है इसलिए 'यज्ञेवै श्रेष्ठतम कर्म' अयम या भवन्सयमाभि वेद का आदर्श है ''आयुर्यज्ञेन कल्पताम'' जिससे संसार मेंफैले हुए प्रदूषण को घटाया जा सकता है। सर्वेभवन्तु सुखिना आर्य समाज का ध्येय है।

4. शिक्षा : सभी प्रकार के धार्मिक, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यों के सम्पादन के लिए सद्ज्ञान आवश्यक है। अतः आर्य समाज ने सभी के लिए शिक्षा हेतु रात्रि पाठशालाएं, स्कूल, गुरुकुल व कालेज तथा विश्वविद्यालय तक का संचालन किया है।

5. महिला जागरणः स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया है, क्योंकि पौराणिक जगत में आज भी स्त्रीशूद्रोनाधीयताम अर्थात् शूद्रों व स्त्रियों को वेद ज्ञान और साधारण ज्ञान भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं, वहीं आर्य समाज की मान्यता है कि जिस प्रकार प्रभु की दी गई सभी वस्तुएं सूर्य, हवा, पानी, अन्न, फल, फूल आदि सभी के लिए है इसी प्रकार प्रभु का वेद ज्ञान भी सभी के लिए है।

6. जन्मगत जातिवाद का विरोधी : आर्य समाज जन्म के आधार पर जाति-पांति को नहीं मानता और शायद संसार में सब से पहली संस्था आर्य समाज ही है, जो कि जन्म को जात का आधार नहीं मानती, बल्कि गुण, कर्म व स्वभाव को जाति का, वर्ग का आधार मानती है क्योंकि वेद में कहा है- जन्मनाजायते शूद्रो' जन्म से सभी शूद्र हैं, अज्ञानी हैं, मूर्ख हैं, एक डॉक्टर व इंजीनियर का लड़का अध्यापक व डॉक्टर बिना पढ़े नहीं बन सकता इसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदिकेवल जन्म से नहीं अपितु तदानुसार, शिक्षा दीक्षा, गुण व कर्म करने पर ही ब्राह्मण आदि वर्ग में आ सकते हैं।

7. छूआछूत विरोध : जिस समय आर्य समाज का संगठन बना तब वेद की सच्ची शिक्षा न होने के कारण और धर्म के नाम पर भ्रम व पाखण्ड फैलाने के कारण छूआछूत की भयंकर बीमारी फैली हुई थी। इसका विरोध आर्य समाज और महत्मा गांधी जी व कांग्रेस ने बड़े ही वेग से किया। इस छूआछूत की बीमारी ने देश की बड़ी हानि की है। अतः इसका उन्मूलन होना चाहिए।

8. राष्ट्रप्रेम तथा स्वाधीनता का सन्देश : आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी ने सर्वप्रथम राष्ट्रप्रेम व स्वाधीनता का संदेश दिया। जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से भी महान है, का संदेश देने वाला आर्य समाज ही है।

9. कुरीतियों का निवारण : देश में फैली सैकड़ों कुरीतियों जैसे बाल विवाह, स्त्री पुनर्विवाह का न होना, छुआछूत, अन्धविश्वास भूत प्रेत आदि अनेक बुराइयोंका आर्य समाज ने निराकरण किया है और अब भी कर रहा है।

10. वर्तमान संघर्ष : अतीत में आर्य समाज ने काफी समाज सुधार के कार्य कर जन-साधारण को बचाया है अब इस वैज्ञानिक प्रचार व प्रसार के युग में आर्य समाज को एक बार फिर संगठित होकर रोज नए-नए पैदा होने वाले भगवानों (गुरुवरों), दूरदर्शन और सरकार द्वारा लोगों की धार्मिक भावनाओं को भड़काने वाले व भ्रमित करने ओ३म् नमः शिवाय, महाभारत आदि के द्वारा आर्य के नाम पर भ्रम और नंगे तथा गन्दे नाचों द्वारा भारतीय सभ्यता व संस्कृति को विकृत करने वाले कदमों का घोर विरोध करके अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए। आर्य समाज एक संस्था ही नहीं अपितु एक वैचारिक क्रान्ति है, आन्दोलन है। इसको अपनी पूरी शक्ति लगाकर आगे बढ़ाए, यही इच्छा व प्रार्थना है।

- महाशय पूर्ण सिंह आर्य

ओ३म्

जन्म दिवस पर शत बन्दन

- राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

उद्धारक हे दिव्य वेद के, मानवता के प्रखर प्रचारक।
आर्ष-मनीषी परम्परा के, प्रतिपादक तुम्! हे उन्नायक।
भरा धरित्री के कण-कण में तुमने वेदों का स्पन्दन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

घोर तमाच्छादित थी वसुधा, विस्तृत था अज्ञान अंधेरा।
असुर वृत्तियों ने निर्भय हो डाला था जन मन पर डेरा।
बन प्रतिमूर्ति शौर्य-साहस की- किया विनष्ट धरणि क्रन्दन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

बन्धन में जकड़ा था पावन, ऋषियों का यह देश महान।
सत्य सनातन शुचितर संस्कृति सहती थी अतुलित अपमान।
तरुणायी को अंगड़ायी दे- सहस जगाया जन अभिमन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

ललकारों से ऋषिवर तेरी, निकल पड़ी थी युवक टोलियाँ।
भयाक्रान्त हो गए विदेशी- शासक, सुनकर सिंह बोलियाँ।
स्वाभिमान व शौर्यशक्ति से - हुआ सुगर्वित भू कन-कन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

जाति-पांति का छुआ छूत का, भगा यहाँ से सारा भूत।
समता समरसता सहिष्णुता - से हो गए सभी अभिभूत।
हर्षोल्लास भरा अन्तर में - ज्योतिर्मय हो गया गगन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, जगी नवल जागृति की क्रान्ति।
जल-थल में व नील गगन में, उत्प्रेरित कर दी उत्क्रान्ति।
महर्षि दयानन्द! तुमने ही - किया सत्यशिव अभिनन्दन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

- मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)

महर्षि दयानन्द और सर्व–धर्म सद्भाव

- श्री विश्वनाथ शास्त्री, २ बी०।४३।७। भिलाई

भारतीय इतिहास में यह पहला अवसर था जब महर्षि दयानन्द ने अपने व्याख्यानों, शास्त्रार्थों और ग्रन्थों के द्वारा विदेशी धर्मों का खण्डन किया। भारतीय सम्प्रदाय और धर्म तो एक दूसरे का खण्डन करते ही रहते थे। शाक्त, शैव, वैष्णव सम्प्रदाय परस्पर एक दूसरे का खण्डन करते रहे हैं। आद्य शंकराचार्य ने जैनों और बौद्धों के साथ शास्त्रार्थ किया और उनके धर्मों का खण्डन करके उनको परास्त कर वैदिक धर्म की स्थापना की। उनके प्रचार और शास्त्रार्थों से बौद्ध धर्म तो भारत में समाप्तप्राय हो गया। किन्तु मतखण्डन पूर्वक स्वमत स्थापना की परम्परा तो भारत में आदि काल से चली आ रही है।

महर्षि दयानन्द ने अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में भारतीय धर्मों और विदेशी धर्मों का एक समान विधिवत् खण्डन किया है। इससे भारतीय धर्मों और विदेशी धर्मों के दुराग्रही अन्धविश्वासी लोगों में कुछ तनाव की भावना आई। इससे कुछ लोगों में यह धारणा बन गई कि महर्षि दयानन्द ने खण्डन के मार्ग पर चलकर दूसरे धर्मावलम्बियों के प्रति सद्भाव को छोड़ वैमनस्य का मार्ग अपनाया है। इससे भारत के विविध धर्मों के अनुयायियों के बीच तनाव बढ़ा है। अब हम कुछेक पंक्तियों में इस बात को स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे कि क्या महर्षि दयानन्द ने खण्डन का मार्ग अपना कर तनाव उत्पन्न किया है अथवा धर्म के इतिहास में एक नई जागृति उत्पन्न की है और प्रत्येक धर्म को वैज्ञानिक आधार पर खड़ा करने का यत्न किया है, सभी धर्मों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया है?

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश की रचना बड़े शुद्ध भाव और सत्यान्वेषण की दृष्टि से की है। वे सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखते हैं– ''यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मत में हैं वे पक्षपात छोड़कर सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो–जो बातें सबके अनुकूल सबके मत में है उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरूद्ध बातें हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़ कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इन हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है– सब मनुष्यों को दुख सागर में डुबा दिया है।'' महर्षि पुनः लिखते हैं– 'यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तारों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ या मतोन्नति वालों के साथ भी बर्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को बर्तना योग्य है।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश की उत्तरार्द्ध अनुभूमिका में एक सार्वभौम मत को प्रवर्तन करने के लिए लिखते हैं– जब तक इस मनुष्य जाति में मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विद्वज्जन ईर्ष्या–द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ने ही सबको विरोध जाल में फंसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फंसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्य मत हो जाय।

शास्त्रार्थ परम्परा और सत्यान्वेषण का समर्थन करते हुए महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश की अनुभूमिका–२ में बारहवाँ समुल्लास आरम्भ करने से पहले लिखते हैं जब तक वादी–प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद या लेख न किया जाय तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता। जब विद्वान् लोगों में सत्यासत्य का निश्चय नहीं होता तभी विद्वानों को महा अन्धकार में पड़कर बहुत दुख उठाना पड़ता है। इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है।

सत्यार्थप्रकाश के उद्धरणों से हमने यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि सत्यासत्य के निर्णय के लिए प्रीति से शास्त्रार्थ परम्परा को चलाना परम आवश्यक है और इसी दृष्टि से महर्षि ने अपने समय में प्रचलित सभी मतमतान्तरों की समीक्षा की है। अब हम महर्षि की जीवनी की ओर आते हैं और यह देखने का यत्न करते हैं कि उनका विविध धर्मों के अनुयायिओं के प्रति कैसा व्यवहार था। महर्षि संन्यासी होने के नाते **'सर्वभूतहिते रतः'** (सब प्राणियों का कल्याण करने वाले थे) वे 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' –दुष्ट के प्रति दुष्टता का व्यवहार–सिद्धान्त को मानने वाले नहीं थे। वे तो दुष्टों के प्रति भी सज्जनता का व्यवहार करते थे। वे कहा करते थे– यदि दुष्ट अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ते तो सज्जन अपनी सज्जनता को क्यों छोड़े? किसी कवि ने सज्जन का बड़ा सुन्दर लक्षण किया हैः–

ते साधवः सुजन्मानस्तैरियं भूषिता धरा।
अपकारिषु भूतेषु ये भवन्त्युपकारिणः।।

उन सज्जनों का जन्म लेना सार्थक है और ऐसे सज्जनों से धरती शोभायमान होती है– जो दुष्टों का भी उपकार करते हैं।

सच पूछिए तो महर्षि ऐसे ही सज्जन थे।

महर्षि दयानन्द ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सिद्धान्त को मानने वाले थे। वे समस्त संसार को अपना परिवार समझते थे। उनके लिए अपने–पराये नाम की कोई बात नहीं थी। वे सब धर्मों में एकता लाना चाहते थे। उन्होंने सभी धर्मों के आचार्यों को एक मंच पर लाने का यत्न किया। उनकी जीवनी का एक प्रसंग यह हैः– दिसम्बर १८७६ में दिल्ली में राजदरबार हो रहा था। वहां महारानी विक्टोरिया के महोत्सव के उपलक्ष में एक बड़ी राजसभा होने वाली थी। उसके लिए सभी राजे–महाराजे और प्रतिष्ठित नागरिक राज–निमंत्रण से वहाँ एकत्र हो रहे थे। कहा जाता है कि महाराजा इन्दौर ने ऐसे अवसर पर धर्म–प्रचार करने के लिए महर्षि को निमन्त्रित किया था। वे राजमण्डल में भी उनका भाषण कराना चाहते थे। राजदरबार के अवसर पर महर्षि के सत्संग का लाभ उच्चकोटि के लोगों ने उठाया। महर्षि तो चाहते थे कि राजाओं, महाराजाओं की सभा करके सब आर्यों में एक धर्म और एकता का तागा पिरो दिया जाय परन्तु अनेक कारणों से इसमें सफलता नहीं मिली। भारतीय राजाओं से आशा को सफल न होते देख एक दिन महर्षि ने अपने स्थान पर भारत के भिन्न–भिन्न मतों और जातीय नेताओं की एक सभा बुलाई। उनके निमंत्रण पर पंजाब के प्रसिद्ध सुधारक कन्हैयालाल जी अलखधारी, श्रीयुत् नवीनचन्द्रराय, श्री हरिशचन्द्र चिन्तामणि, सर सैय्यद अहमद खां, श्री केशवचन्द्र सेन और श्री इन्द्रमन जी– ये छह सज्जन वहाँ पधारे। वहाँ महर्षि ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि हम भारतवासी सब परस्पर एक मत होकर एक ही रीति से देश का सुधार करें तो आशा है भारत देश सुधर जावेगा, किन्तु कई मौलिक मतभेद होने के कारण वे सब एकता के सूत्र में सम्बद्ध न हो सके।

महर्षि दयानन्द को अपने सिद्धान्त प्यारे थे परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि वे अन्यों के सिद्धान्त की अवहेलना करते थे। वे बड़े सहनशील थे। वे पौराणिक या हिन्दू धर्म के मूर्ति–पूजा आदि सिद्धान्तों की शास्त्रीय दृष्टि से समीक्षा करते हुए भी हृदय को विशालता के कारण हिन्दू धर्म को उदार ही मानते थे। अपने जीवन के एक प्रसंग में वे १८७७ के लगभग अमृतसर पहुंचे। वहां के कमिश्नर की प्रार्थना पर महर्षि उनके बंगले पर पधारे। वार्तालाप करते हुए कमिश्नर ने कहा कि– ''हिन्दू धर्म को'' 'सूत के समान कच्चा' क्यों कहते हैं?'' महर्षि ने उत्तर दिया– ''यह कच्चा नहीं

किन्तु लोहे से भी कड़ा है। हिन्दू धर्म समुद्र के समान है। इसमें अनेक अच्छे और बुरे मतों के तरंग विद्यमान हैं। इस धर्म में ऐसे भी लोग हैं जो अत्यन्त दयावान् हैं, सदाचारी हैं, परोपकार परायण रहते हैं और एक निराकार परमेश्वर को अपने मनो मन्दिर में पूजते हैं। इनके विपरीत वे लोग भी हिन्दू धर्म में पाए जाते हैं जो महाक्रूर, अनाचारी, वामी हैं; कोरे नास्तिक, अवतारों को मानने वाले हैं। यहाँ योगी, ध्यानी, तपस्वी और आजीवन ब्रह्मचारी रहने वाले भी विद्यमान हैं और ऐसे भी अनेक हैं– जिनका उद्देश्य आमोद–प्रमोद और संसार का सुख है। हिन्दू धर्म में जहाँ छूआ–छूत मानने वाले सैकड़ों हैं वहाँ सबके साथ भोजन करने वाले हजारों हैं। परमार्थ–दर्शी और तत्वज्ञानी लोग इस धर्म में उच्च पद के पाए जाते हैं और ऐसे भी मिल जाते हैं जो ज्ञान के पीछे डण्डा लिए डोलते हैं। उत्तम मध्यम और निकृष्ट विचारों–आचारों के सभी मत और उनके मानने वाले मनुष्य इस मार्ग में मिलते हैं। वे सभी हिन्दू हैं और उन्हें कोई हिन्दूपन से निकाल नहीं सकता इसीलिए हिन्दू धर्म निर्बल नहीं किन्तु परम सबल है।''

प्रायः सभी धर्म अपने मत को सर्वश्रेष्ठ और अन्यों को दीन समझते हैं। इस प्रवृत्ति के कारण वे अपने धर्म के विरुद्ध किसी बात को सुनना नहीं चाहते। इसी प्रवृत्ति के कारण भारत में प्रचलित सभी धर्म महर्षि के खण्डन से उनके विरोधी बन गए परन्तु महर्षि ने तो खण्डन का मार्ग सत्यासत्य के निर्णय के लिए अपनाया था। वे किसी के दिल को दुखाना नहीं चाहते थे। वे सैद्धान्तिक दृष्टि से सभी धर्मों का खण्डन करते थे, किन्तु सभी धर्मों के अनुयायियों से प्रेम करते थे, विरोधियों का भी हित किया करते थे। अपने हत्यारों को भी क्षमा कर देते थे और उनके कल्याण के लिए यत्न शील रहते थे। महर्षि के जीवन से संबन्धित एक और घटना –लगभग १८६७ में वे अनूपशहर में प्रचारार्थ पहुंचे। वहां एक ब्राह्मण ने रुष्ट होकर उन्हें पान में विष दे दिया। महर्षि ने न्यौली कर्म करके विष को अपने शरीर से निकाल दिया। सैय्यद मुहम्मद तहसीलदार, जो महर्षि के भक्त थे, ने जब यह समाचार सुना तो ब्राह्मण को कैद कर लिया। तहसीलदार का विचार था कि मेरे इस कर्म से महर्षि प्रसन्न होंगे, किन्तु जब उसने महर्षि से यह बात बताई तो महर्षि अप्रसन्न हो गये और उन्होंने कहा कि– ''मैं दुनिया को कैद कराने नहीं बल्कि उसे कैद से छुड़ाने आया हूँ। वह यदि अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ता तो हम अपनी श्रेष्ठता क्यों छोड़ें?

महर्षि का ईसाइयों के प्रति कैसा सद्भाव था? ईसाइयों के गिरजाघरों के प्रति उनकी कैसी भावना थी? यह जानने के लिए एक घटना का उल्लेख करते हैं जो महर्षि के जीवन से संबन्धित हैं–१८७६ के लगभग महर्षि बरेली पहुंचे। वहां उनके व्याख्यान होते थे। महर्षि का पादरी स्कॉट के साथ स्नेह सम्बन्ध था। वे नहीं आये तो महर्षि ने व्याख्यान के बाद पूछा कि भक्त स्कॉट क्यों नहीं आये? पता चला कि वे रविवार को गिरजाघर जाते हैं। महर्षि ने कहा कि चलो आज भक्त स्कॉट का गिरजाघर देख आएँ। महर्षि तीन चार सौ मनुष्यों के साथ गिरिजा में पहुंचे। महर्षि को आते देख पादरी स्कॉट वेदी पर से नीचे उतरकर आए और महर्षि को उपदेश देने के लिए प्रार्थना की। महर्षि ने उनके आग्रह पर वहाँ उपदेश दिया।

महर्षि का मुसलमानों के प्रति भी बड़ा स्नेहपूर्ण व्यवहार था और अभिजात वर्ग के मुसलमान भी उनका आदर करते थे। १८७३ के आसपास की बात है– महर्षि अलीगढ़ पहुंचे। वहां मुस्लिम युनिवर्सिटी अलीगढ़ के संस्थापक और प्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैय्यद अहमद खां महर्षि की सेवा में प्रायः नित्य आया करते थे। एक दिन सैय्यद साहिब कई प्रतिष्ठित मुसलमानों और अंग्रेजों सहित महर्षि की सेवा में उपस्थित हुए और अग्निहोत्र की उपयोगिता पर वार्तालाप होता रहा। १८७६ में दिल्ली में राजदरबार के अवसर पर महर्षि ने सर्वधर्म एकता का आयोजन किया। इस गोष्ठी में परस्पर सौहार्दपूर्ण वार्तालाप हुआ।

लगभग १८७७ में महर्षि लाहौर पधारे। उनको लाहौर बुलाने में अधिक हाथ ब्रह्म समाजियों का था। उन्होंने महर्षि के दो व्याख्यान अपने मन्दिर में कराए। प्रथम व्याख्यान 'वेद ईश्वरीय ज्ञान' विषय पर था और दूसरा 'पुनर्जन्म' पर। ये दोनों व्याख्यान ब्रह्म समाज के मन्तव्यों के विरुद्ध थे। इसलिए ब्रह्म समाजी उनका विरोध करने लगे। महर्षि पुराणों का भी खण्डन करते थे, इसलिए जिस उद्यान में महर्षि निवास करते थे उसके मालिक ने भी उनका विरोध किया। फलतः महर्षि के भक्त जन उन्हें डॉक्टर रहीम खां की कोठी में ले आए। यह कोठी भक्त छज्जू के चौबारे के पास थी। इस कोठी में महर्षि व्याख्यान देते और दूसरे दिन शंका समाधान करते थे। इसी कोठी में निवास करते हुए महर्षि ने आर्य समाज के संशोधित दस नियम बनाये तथा आर्य समाज लाहौर की स्थापना हुई जिसका पहला सत्संग भी यहीं हुआ। धन्य हैं महर्षि! और धन्य हैं डॉ० रहीम खां जिन्होंने सर्वधर्म सद्भाव का एक अनूठा उदाहरण हमारे सामने रखा।

महर्षि जब जोधपुर में प्रचारार्थ पधारे थे तो वे राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री बरकत उल्ला खां के दादा की कोठी में निवास करते थे। श्री बरकत उल्ला खां ने सर्वधर्म सद्भाव के नाते उस कोठी को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में दान कर दिया। ऐसे ही विरले अभिजात्य सज्जनों के सौजन्य से सर्वधर्म एकता की आदर्श भावना परम्परा से चली आ रही है।

महर्षि ने सर्वधर्म सद्भाव का अभियान चलाया था और आर्य समाज इस अभियान को अब तक चलाता आ रहा है। इतना ही नहीं मुस्लिम वर्ग भी आर्य समाज के इस सौहार्दपूर्ण अभियान का आदर करते हैं। आर्य समाज स्थापना शताब्दी दिल्ली १९७५ तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर १९८३ के अवसर पर मुसलमानों ने शोभा यात्राओं के समय अपनी भावभीनी श्रद्धाज्जलि अर्पित की थी। प्रभु इस परम्परा को दोनों ओर से बनाए रखे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 41वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय आर्य महा सम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

जीवन मे त्याग, समर्पण, सेवा और बलिदान को अपनाते हुए साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाने के लिए कार्य करें आर्यजन

– स्वामी आर्यवेश

राष्ट्रीयता की भावना से युवाओं को ओत–प्रोत करने की आवश्यकता

–अनिल आर्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 41वें वार्षिकोत्सव पर दिनांक 31 जनवरी से 2 फरवरी, 2020 तक त्रिदिवसीय 'अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन' का भव्य शुभारम्भ रामलीला मैदान विशाखा एनक्लेव पीतमपुरा दिल्ली में किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ विश्व शान्ति यज्ञ से किया गया जिसके ब्रह्मा पद को वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी ने सुशोभित किया।

इस अवसर पर ध्वजारोहण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। सम्मेलन के दूसरे दिन राष्ट्रीय एकता तिरंगा यात्रा का भव्य आयोजन किया गया जिसमें हजारों आर्यों ने भाग लेकर राष्ट्ररक्षा का संकल्प लिया। इस अवसर पर दोपहर बाद राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। इस समारोह में विभिन्न दिवसों में आर्य महिला सम्मेलन, राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन राष्ट्ररक्षा सम्मेलन सहित अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

रविवार, 2 फरवरी को सम्मेलन के समापन अवसर पर ओ३म् ध्वजारोहण राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठा. विक्रम सिंह आर्य ने किया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री सुरेश चव्हाण रहे। पर्यावरण शुद्धि हेतु किये गये 101 कुण्डीय विश्व शांति यज्ञ की पूर्णाहुति आचार्य अखिलेश्वर जी ने विधि–विधान से सम्पन्न की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त कवि सारस्वत मोहन मनीषी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री, आचार्य सुभाष शास्त्री (बांग्लादेश), सुभाष बब्बर (जम्मू कश्मीर), गायत्री मीना (नोएडा), गवेंद्र शास्त्री, आचार्य भानु प्रकाश (मध्य प्रदेश) महेन्द्र भाई (दिल्ली), डॉ जयेन्द्र आचार्य, डॉ आर आर्य, चौ मंगल सिंह (गाजियाबाद), (आचार्य धनेश्वर बेहरा (उड़ीसा), आचार्य संजीव रूप (बदायूं), आनंद प्रकाश आर्य (हापुड़), देवेन्द्र भगत, ब्र. दीक्षेंद्र आर्य, राम किशन शास्त्री (बेहरोड), ईश आर्य (हिसार), जितेन्द्र सिंह आर्य (फरीदाबाद), (आचार्य कृष्ण प्रसाद कौटिल्य (झारखंड) आदि ने अपने विचार रखे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में आर्यों का आह्वान किया

कि वे सब जीवन में त्याग, समर्पण सेवा और बलिदान को अपनाते हुए देश में साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ाने के लिए कार्य करें। उन्होंने कहा कि आज देश में सामजिक कुरीतियों की बाढ़ सी आ गई है। धार्मिक पाखण्ड, अन्धविश्वास, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या जैसी विकराल बुराईयाँ देश में पूरी तरह से व्याप्त हैं। हम सबको मिलकर इनके विरुद्ध कड़ा संघर्ष करना होगा। स्वामी जी ने कहा कि नशाखोरी और गोहत्या आज समाज की सबसे विकराल त्रासदी बन गई है। आज का युवा पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर नशे में आकंठ डूब रहा है जिसके कारण समाज में अनेकों समस्याएं पैदा हो रही है और उसका अपना जीवन तो बर्वाद हो ही रहा है। स्वामी जी ने कहा कि अपनी आकर्षक योजनाओं तथा कार्यक्रमों के द्वारा युवाओं को वेद मार्ग पर चलाने के लिए उन्हें आर्य समाज से जोड़ा जाना अत्यन्त आवश्यक है।

इस अवसर पर मुख्यअतिथि श्री सुरेश चव्हाण जी ने कहा कि आज कुछ लोग देश को तोड़ने व अलगाववाद की बात कर रहे हैं, ऐसे लोगों से सरकार को कड़ाई से निपटना चाहिए उन्होंने कहा कि जब तक हम दो, हमारे दो, हम सबके दो जनसंख्या नियंत्रण कानून नहीं हो पाता है, तब तक समस्या का हल नहीं होगा।

महासम्मेलन के संयोजक केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज युवा शक्ति को देश भक्त, चरित्रवान व संस्कारित करने का अभियान तीव्र गति से चलाएगा। आज देश की युवा पीढ़ी में अस्थिरता और अलगाव दिखाई दे रहा है। हमें राष्ट्रीयता की भावना से युवाओं को ओत–प्रोत करने का कार्य करना है, देश रहेगा तो हम सब रहेंगे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का देश की आजादी में उल्लेखनीय योगदान रहा, अब रक्षा करने का दायित्व भी आर्यजनों को निभाना है।

समारोह में कवि सारस्वत मोहन मनीषी, उत्तर प्रदेश के प्रांतीय महामंत्री प्रवीण आर्य, कविता आर्या, प्रवीन आर्या आदि ने ईश व देशभक्ति रचनाओं व गीतों से समा बांध दिया। देश के विभिन्न प्रान्तों से हजारों आर्यजनों ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। शांतिपाठ के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

गाय बचेगी देश बचेगा | ओ३म् | नशा हटाओ युवा बचाओ

स्वामी दयानन्द सरस्वती

बेटी बचेगी समाज बचेगा

विश्व की समस्त आर्य समाजों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

गौहत्या, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, अश्लीलता एवं धार्मिक अंधविश्वास के विरुद्ध

स्वामी इन्द्रवेश

विशाल जन–चेतना यात्रा

दिनांक 12 फरवरी, 2020 से 18 फरवरी, 2020 (महर्षि दयानन्द जन्मदिवस) तक

प्रारम्भ : दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (आई.टी.आई. चौक) सोनीपत

समापन : अनाज मण्डी, लोहारू जिला–भिवानी, हरियाणा

भारतीय संस्कृति में गाय के महत्व, प्रतिष्ठा एवं सम्मान को सदैव मान्यता मिलती रही है। वैदिक काल से लेकर अंग्रेजी शासन तक गौवंश का महत्व निरन्तर बना रहा, किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् गौवंश का जितना विनाश व अपमान हुआ है उतना पहले कभी नहीं हुआ। एक तरफ गौवंश की हत्या एवं गौमांस का निर्यात निर्बाध गति से जारी है वहीं समाज में गौवंश को बेहद तिरस्कार का शिकार भी होना पड़ रहा है। जो लोग गाय को गौमाता के रूप में मानते हैं वे भी उसे पालने व अपने घर में रखने तक को तैयार नहीं है। हजारों गाय, बछड़े व सांड़ सड़कों पर दुर्घटना ग्रस्त होते हुए दिखाई देते हैं। पोलीथिन एवं कूड़ा–कचरा खाने को मजबूर गौवंश विनाश के कगार पर है। जनता के दिलों में गाय के प्रति संवेदना उत्पन्न करने व उसकी रक्षा के लिए प्रेरित करने तथा सरकार को गौहत्या व गौमांस के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए बाध्य करने के लिए तथा समाज में निरन्तर बढ़ती नशाखोरी, युवा पीढ़ी के चारित्रिक पतन व अश्लीलता तथा कन्या भ्रूण हत्या एवं महिलाओं पर हो रहे अत्याचार तथा धार्मिक अंधविश्वास आदि कुरीतियों के विरुद्ध जागृति पैदा करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 12 फरवरी, 2020 (बुधवार) से 18 फरवरी, 2020 (मंगलवार) महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस तक निम्नलिखित कार्यक्रमानुसार भव्य जन–चेतना यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। यात्रा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी, स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी, स्वामी नित्यानन्द सरस्वती जी, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या व राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य आदि यात्रा में जन सभाओं को सम्बोधित करेंगे। इनके अतिरिक्त चौ. हरिसिंह सैनी हिसार पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार,श्री विशाल मलिक, प्रतिष्ठित समाजसेवी एवं युवा उद्यमी, महंत चरणदास जी,भिवानी, महंत राजनाथ योगी,गऊशाला लेघां, श्री इन्द्रजीत आर्य,प्रधान आर्य समाज नरवाना, श्री सुभाष श्योराण, निदेशक इंडस पब्लिक स्कूल जीन्द,आचार्य हरिदत्त गुरुकुल लाढोत, इंद्रसिंह आर्य व डॉ. भूपसिंह भिवानी आदि का भी सान्निध्य प्राप्त होगा। इस महाअभियान में आप सभी का तन–मन–धन से सहयोग चाहिए।

आयोजन समिति

सर्वश्री सज्जन राठी, ऋषिराज शास्त्री, हरपाल आर्य, अजयपाल आर्य, प्रदीप कुमार, विवेकानन्द शास्त्री, अशोक आर्य, आजाद सिंह पूनिया, रामवीर आर्य, रामपाल शास्त्री, प्रिं. आजाद सिंह, सोनीपत, जय प्रकाश आर्य, सोहटी, प्रवीन आर्य, राठधान, मंजीत दहिया, रोहट, राजेन्द्र चहल, बलराम आर्य, गंगाना, डॉ. नरेश, सोनीपत मा. भगवान सिंह, धर्म प्रकाश दहिया, काठमंडी, सोनीपत, राजकुमार दहिया, बिधलान, डॉ.जयवीर मलिक, सुखबीर मलिक आंवली, जितेन्द्र सिंह खर्ब, गुमाना, बलबीर शास्त्री, भैंसवाल, मा. नफेसिंह, रिठाल, नरेन्द्र हुड्डा, धामड़, सुमित आर्य सरपंच, मकड़ौली खुर्द, वीरपाल देशवाल, भैयापुर लाढोत, राजेन्द्र आर्य, राज कुमार आर्य, भैयापुर, राजवीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण सिंह, रामकुमार आर्य, जिले सिंह सैनी, जिले सिंह कुण्डू, कृष्ण प्रजापत, पं. नरेश आर्य, वीरेन्द्र शास्त्री, दयानन्द शास्त्री, टिटौली, वेद प्रकाश आर्य सिंहपुरा कलां, कै. कपूर सिंह, राजवीर मलिक, राजेन्द्र आर्य, मोखरा, कर्मवीर आर्य, सुदामा आर्य, खरकड़ा, डॉ. सीसराम, बहलबा, नफे सिंह आर्य, डॉ. राजेश आर्य, सत्यवीर आर्य, मनोज पहलवान, नवाब सिंह, प्रो. ऋतुराज, फरमाना, नरेश दौरड, बादल सिंह आर्य, मालवी, वीरेन्द्र लाठर, डॉ. बलवीर सिंह, जुलाना, देवेन्द्र आर्य, बुआना, जसवन्त सिंह, जुलाना, नफेसिंह, धुपसिंह बेनीवाल, गतौली, एडवोकेट रणवीर पहलवान, झमौला, रणवीर राठी, प्रो.धर्मबीर आर्य, मा. जगदीश, कर्ण सिंह रेढ़ू, जींद, मा.सत्यवीर आर्य, जुलानी, सहदेव समर्पित, पृथ्वी सिंह चहल, केवल सिंह जुलानी, डॉ. राजपाल आर्य, सतपाल आर्य सरपंच, विजय आर्य, जाजवान, ओम प्रकाश आर्य, बरसोला, अशोक आर्य, मा. अजीत पाल, सोनू आर्य, कर्मपाल आर्य, संजय पहलवान, खटकड़, जगफूल ढिल्लों, वीरेन्द्र बूरा, रामनिवास बूरा, विकास दलाल, जगबीर पंचाल, बिजेन्द्र आर्य, पवन शर्मा, सुरेश शर्मा, रविन्द्र खटकड़, ऋषिपाल, रघुवीर, घोगड़ियाँ, सूरजमल आर्य, छात्तर, धूलाराम आर्य, थुआ, मनीष चांदपुर, धर्मवीर सरपंच, गोइयां, प्रीतिपाल आर्य, प्रधान, हरिकेश राविश एडवोकेट, मनीराम आर्य, सत्यवीर आर्य, पवन आर्य, प्रधान शहर आर्य समाज, कैथल, मा. श्यामलाल आर्य, मा. अमित गुप्ता, सुरेन्द्र पहलवान, मा. ओम प्रकाश आर्य, महावीर सिंह, जयपाल आर्य, डॉ. होशियार सिंह, किरणपाल, कैथल, विजय आर्य, अश्वनी आर्य, नरेश आर्य, अनिल आर्य, नरवाना, भौम सिंह आर्य, विक्रम आर्य, सोनू आर्य, बिठमड़ा, मोलड़ सिंह, सुरेवाला, मा. नफे सिंह पूनिया, मनुदेव शास्त्री, जयवीर सरपंच, राजली, कर्ण सिंह आर्य, खोखा, बलवन्त सिंह आर्य, न्याणा, डॉ. प्रमोद योगार्थी, नरेन्द्र पाल मिगलानी, सेठ बजरंग लाल गोयल, देवेन्द्र सैनी, दलवीर सिंह आर्य, महेन्द्र सिंह आर्य, सत्य प्रकाश आर्य, सतपाल अग्रवाल, जयवीर सोनी, बलराज मलिक,हिसार, बलजीत आर्य डोभी, राजमल ढाका, धीरणवास, आर्य शमेसर नम्बरदार, लाडवा, अशोक आर्य एडवोकेट, प्रि. धूप सिंह, डॉ. एन.पी. गौड़, जयसिंह जांगड़ा, बहल, सोमवीर आर्य, पाजू, नारायण सिंह एडवोकेट, राजेश आर्य, चैहड़कला, पिताम्बर शर्मा, नरेन्द्र आर्य, संजीत आर्य, सिंघानी, बाबूलाल आर्य, सतनारायण, महेन्द्र आर्य, चन्द्र प्रकाश मलिक, ओम प्रकाश, जुई, आशीष, मा. प्रताप सिंह आर्य, ढिगावा, धर्मवीर शास्त्री, राम अवतार आर्य, लोहारू, राजेश ढांगी, जयनारायण आर्य, आमेवीर आर्य सरपंच, फरटिया, रमेश कौशिक, सोहासड़ा, अशोक भारद्वाज, भिवानी।

बेटी बचाओ अभियान की कार्यकर्ता : कु. मुकेश आर्या, भिवानी, श्रीमती अलका आर्या, चैहड़कलां, कविता आर्या, जगमति मलिक, रजनी आर्या,प्रधाना कैथल, वीरमति आर्या, जुई, अंजलि आर्या, फरमाना, एकता आर्या, मोखरा, रीमा आर्या, रोहतक, सुमन आर्या, राज कुमारी आर्या, बोहर, पूजा आर्या, महम, मंजू आर्या, मीनू आर्या, निंदाना, मनीषा आर्या, किरण आर्या, इस्माईला, निशा आर्या, रधाना, इन्दू आर्या, सरोज, कमलेश आर्या, रोहतक, कल्याणी आर्या, आर्य नगर।

नोट :– महा अभियान से जुड़ने के लिए सम्पर्क करें।

यात्रा कार्यक्रम

12 फरवरी, 2020

1.	दून व. मा. वि. सोनीपत	9 बजे
2.	ककरोई	
3.	भटगांव	12 बजे
4.	बिधलान	1 बजे
5.	विरथान	
6.	फरमाणा	2 बजे
7.	भैंसवाल	3 बजे
8.	आंवली	4 बजे
9.	गुमाना	5 बजे
10.	रिठाल	6 बजे
11.	धामड़	7 बजे
12.	मकड़ौली खुर्द	7.30 बजे
13.	गुरुकुल लाढ़ौत	8 बजे
14.	टिटौली	9 बजे (रात्रि पड़ाव)

13 फरवरी, 2020

1.	टिटौली	8 बजे
2.	समरगोपालपुर	
3.	निडाना	
4.	मदीना	
5.	मोखरा	9 बजे
6.	खरकड़ा	10 बजे
7.	बहलबा	11 बजे
8.	महम	
9.	भैणी चन्द्रपाल	
10.	फरमाणा	12 बजे
11.	दोरड़	1.30 बजे
12.	मालवी	2.30 बजे
13.	जुलाना	3.30 बजे
14.	गतौली	5 बजे
15.	खटकड़	7 बजे
16.	जीन्द	9 बजे(रात्रि पड़ाव)

14 फरवरी, 2020

1.	आर्य समाज रेलवे स्टेशन	8 बजे
2.	जुलानी	8.30 बजे
3.	जाजवान	9 बजे
4.	बरसोला	
5.	कसुहन	
6.	कालता	
7.	घोगड़ियां	10.30 बजे
8.	कुचराना कलां	
9.	छातर	12.30 बजे
10.	थूआ	
11.	किठाना	
12.	तारागढ़	1.30 बजे
13.	देबण	
14.	तितरम	3 बजे
15.	चंदाना	4 बजे
16.	गुहणा	5 बजे
18.	छौत	
19.	पाडला	7 बजे
20.	कैथल	8.30बजे (रात्रि पड़ाव)

15 फरवरी, 2020

1.	बालू	
2.	बाता	9 बजे
3.	कलायत	
4.	कलरम	10
5.	शिमला	11
6.	नरवाना	12 बजे
7.	दनौदा	
8.	बिठमड़ा	2 बजे
9.	सुरेवाला	
10.	उकलाना	
11.	बरवाला	
12.	बधावड़	
13.	राजली	3.30 बजे
14.	धिराय	4 बजे
15.	खोखा	5 बजे
16.	न्याणा	6 बजे
17.	हिसार	8 बजे (रात्रि पड़ाव)

16 फरवरी, 2020

1.	हिसार	9 से 1 बजे
2.	लाडवा	2 बजे
3.	भगाना	
4.	कंवारी	3 बजे
5.	बालावास	4 बजे
6.	नलवा	
7.	तोसाम	
8.	मण्डाली	5 बजे
9.	बहल	7 बजे (रात्रि पड़ाव)

17 फरवरी, 2020

1.	बहल	8 बजे
2.	सिरसी	
3.	पाजू	10 बजे
4.	सेहर, ढाणा जोगी	11 बजे
5.	पहाड़ी	1 बजे
6.	मनफरा चौक	2 बजे
7.	ओबरा	
8.	देवराला	3 बजे
9.	कैरू	
10.	चन्दावास	5 बजे
11.	बाबरवास	
12.	झुण्डावास	6 बजे
13.	जूई	7 बजे (रात्रि पड़ाव)

18 फरवरी, 2020

1.	जूई	8 बजे
2.	कुड़ल	
3.	पोंकरवास	
4.	ढिगावा मंडी	10.30
4.	सिंघानी	
5.	लोहारू	11 बजे (समापन समारोह)

संयोजक : दीक्षेन्द्र आर्य

आयोजक : युवा निर्माण अभियान, बेटी बचाओ अभियान, स्वामी इन्द्रवेश प्रतिष्ठान

प्रान्तीय कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

दूरभाष :– 9354840454, 9468165946, 9416630916, ईमेल :– abhiyangoraksha@gmail.com

स्वामी दयानन्द के लघु ग्रन्थों पर एक दृष्टि

- श्रीमती चित्रा नाकरा

मानव के कार्य, विचार एवं व्यवहार में एक अन्तः सूत्र प्रवाहित रहता है। इसी प्रक्रिया में यदि हमअपने समय के अन्यतम विचारक, दार्शनिक व नवजागरण के अग्रदूत का विश्लेषणात्मक अध्ययन करें तो हमें एक स्पष्ट दृष्टि इस सम्बन्ध में मिलेगी, वह होगी 'सत्य' की। आर्य समाज की स्थापना, प्रचार कार्य, उपदेश, प्रवचन, शास्त्रार्थ, प्रश्नोत्तर, ग्रन्थ लेखन व वेदभाष्य इत्यादि में सर्वत्र यही सूत्र बिखरा दिखाई देता है। इसी के सम्बन्ध के कतिपय बिन्दुओं पर विचार अपेक्षित है। बाल्यकाल की तीन घटनाएं जो कि भिन्न-भिन्न कालान्तराल में हुई। इसी सूत्र से सम्बन्धित है। योगपथ के पथिक के रूप में भटकते हुए ज्वालानन्द, शिवानन्द सदृश योगियों के सान्निध्य में सीखा योग, हिमाश्मय नदियों का सन्तरण करते हुए जीवन त्याग की इच्छा के पश्चात् उत्पन्न सामाजिक कल्याण की चेतना से उद्बुद्ध परोपकार कार्यप्रवृत्ति, विरजानन्द से अविद्या, अज्ञाननाशक बनने की चाहत लिए पाखण्ड खण्डिनी के उत्तोलक, सर्वस्व त्याग देने वाले तथा पुनः तपस्या की ओर बढ़ने वाले, भागवत (पाखण्ड) खण्डन से प्रारम्भ कर सदियों से सामान्य जन से विलुप्त प्रायः कर दिए गए वेदों को आगे लाकर तथा उनका तात्पर्यार्थ व्यक्त कर सर्वत्र सत्य की ही साधना करते रहे।

लघु ग्रन्थों के रूप में उनकी कतिपय रचनाएं मिलती हैं जो सर्वत्र सत्यान्वेषण की स्पष्ट प्रतिमाएं हैं इनमें वेद विरूद्ध मतखण्डन, वेदान्तिध्वान्त निवारण, शिक्षापत्री ध्वान्त निवारण, भ्रान्ति निवारण, भ्रमोच्छेदन, अनुभ्रमोच्छादन तथा व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला, गो करुणा निधि व पंचमहायज्ञविधि प्रमुख है।

'सत्यार्थ प्रकाश' के पूर्वार्द्ध भाग में तथा उत्तरार्थ भाग में अन्तर यह है कि प्रथम तो विधि भाग है अर्थात् खण्डन की न्यूनता है तथा सिद्धान्त विषय का प्रतिपादन है (जो कि प्रथम से दस समुल्लास तक है) पश्चात स्वमन्तव्यों का स्पष्टोल्लेख है व अमन्तव्यों का भी। इसी भांति यहां उल्लिखित दस लघुग्रन्थों में छह खण्डन परक हैं तो चार खण्डन की प्रवृत्ति को लिए मण्डनपरक हैं।

वैदिक धर्म के विकृतस्वरूप में काल की कालिमा से अभिभूत हिन्दू धर्म में अनेक मतादि प्रचलित हो गए थे उनमें से कुछ तो सम्पूर्ण भारत में, तो कुछ प्रान्तविशेष तक सीमित रहे। 'वेद विरूद्ध मत खण्डन' नामक लघुकाय प्रश्नोत्तर रूप ग्रन्थ में वल्लभादि मतस्थों से प्रश्न व उसका खण्डन किया गया है। एक सांसारिक व्यक्ति की अपनी सीमाएं हैं, वह अपना कल्याण करने का अपरा प्रयास कर लें परन्तु किसी अन्य का मध्यस्थ बन उसे स्वर्ग लोक पहुँचा दें यह सर्वथा असम्भव है। पथमत 'स्वर्ग' नाम किसी स्थान विशेष का नहीं, क्योंकि सुख नाम ही स्वर्ग व 'दुःख' नाम नरक है। अतः यह कल्पना भी मिथ्या है। ईश्वर का स्वरूप चतुर्भुज, गोलोक वासी आदि मानना वेद के विरूद्ध है, क्योंकि वेद में उसका रूप 'स पर्य्यगात् शुक्रमकायमव्रणमस्नाविरम्' आदि से निराकार व 'न तस्य प्रतिमा अस्ति, यस्य नाम महद्यशः' आदि से मूर्तिरहित प्रतिपादित है। साथ ही ईश्वर के नाम पर कंठी व तिलक व अन्य निरर्थक आकृति धारण भी भ्रममूलक है। 'प्राणप्रतिष्ठा' भी वेदमन्त्रादिकों से की हुई भी व्यर्थ ही है, क्योंकि कोई भी कार्य मृण्मात्र में प्राणसंचार वा तद्वत् कार्य नहीं कर सकता। 'पुराण' का तात्पर्य भी सम्प्रति प्रचलित भागवातादि से नहीं अपितु 'इतिहास' से लेना चाहिए। 'ब्राह्मणग्रन्थ' जो कि वेदभाष्य ही है, भी पुराण का रूप ही है। ब्राह्मणानीतिहासः पुराणानीति' से सिद्ध है कि पुराण से यही अभिप्रेत है। यह भी स्पष्ट है कि व्यास जी के नाम से प्रसिद्ध प्रचलित पुराण उनकी रचनाएं नहीं हैं। ये किन्हीं अन्य संस्कृत भाषा एवं काव्यविदों की रचनाएं हैं। 'देव' शब्द से भी मूर्तियां नहीं अपितु 'विद्वांसो वै देवाः' लेना चाहिए। माता, पिता व गुरु भी देव तुल्य है। 'श्री कृष्णः शरणं मम' वाक्य भी वेदविरूद्ध व व्याकरण की दृष्टि से दूषित है। जैसे वेद और युक्ति से विरुद्ध वल्लभ का सम्प्रदाय है वैसे ही शैव, शाक्त, गाणपत्य, शोर और वैष्णवादि सम्प्रदाय भी वेद और युक्ति से विरुद्ध ही हैं।

आधुनिक वेदान्तियों के मत में वेदादि सत्यशास्त्रों के पठन-पाठन छूटने से ध्वान्त अर्थात् अन्धकार फैल गया है उसका निवारण 'वेदान्तिध्वान्त निवारण' में किया गया है। नवीन वेदान्तियों के मन में है - 1. जीव को ब्रह्म मानना, 2. स्वयं पाप करें और कहं कि हम अकर्त्ता और अभोक्ता हैं, 3. जगत को मिथ्या कल्पित मानते हैं।

ईश्वर, जीव व प्रकृति ये तीन तत्व हैं। तीनों ही जगत के भिन्न-भिन्न कारण व कार्य से परस्पर सम्बद्ध है। 'द्वा सुपर्णासयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते, तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति, अनश्नन्यो अभिचाकशीति' के अनुसार त्रैत का सिद्धान्त स्पष्ट है। कोई भी कर्म जो क्रियमान है संचित है या प्रारब्ध, उसका फल अवश्यंभावी है, अतः यह कहना कि कोई भी कर्म करके उसका फल न भोगे ठीक प्रतीत नहीं होता। इसी तरह जगत् को जो कि हमारे सम्मुख सत्यवत् है, मिथ्या मानना मूर्खता के अतिरिक्त कुछ नहीं।

शिक्षापत्री ध्वान्तनिवारण में सहजानन्दादि मतों के प्रति प्रश्न और उन मतों का खण्डन (स्वामिनाराणमतदोष दर्शनात्मकम्) किया गया है। जन्म, मरण, हर्ष, शोक, अल्पज्ञ अल्पशक्ति आदि गुण युक्त पुरुषविशेष कृष्ण के परब्रह्म भगवान पूर्ण पुरुषोत्तम आदि नाम नितान्त असम्भव है। एक सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्द स्वरूप, निर्दोष, निराकार, अवतार रहित वेद युक्ति सिद्ध परमात्मा को छोड़कर जन्म-मरण युक्त कृष्ण की उपासना करनी, यह जो सहजानन्द ने कहा है, इससे ज्ञात होता है कि उसको पदार्थ ज्ञान किञ्चित मात्र भी नहीं था। क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान अनन्त गुणयुक्त स्वभाव वाला होने से जीव के समान कभी नहीं होता। 'सहजानन्द' की बनाई शिक्षापत्री को पढ़ना, सुनना या पूजना किसी भी प्रकार कल्याण कारक नहीं हो सकता अतः यह मत त्याज्य है।

स्वामी दयानन्द के महान् कार्य वेदभाष्य के सम्बन्ध में शंकाएं उपस्थित की गई। वे लिखते हैं ''इस वेदभाष्य के विषय में पहले आर. ग्रिफिथ, सी. एच. टानी और पं. गुरुप्रसाद आदि पुरुषों ने कहीं-कहीं अपनी सामर्थ्य के अनुसार पकड़ की थी। सो उनका उत्तर तो अच्छे प्रकार दे दिया गया था, परन्तु अब पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न ने पूर्वोक्त विद्वानों का राग पकड़ कर सन के छूछे गोले चलाए हैं। इसलिए यद्यपि मेरा बहु अमूल्य समय ऐसे तुच्छ कामों में खर्च न होना चाहिए परन्तु दो बातों की सिद्धि समझकर संक्षेप से कुछ लेख करना आवश्यक समझता हूँ। एक तो यह है कि ईश्वरकृत सत्यविद्या पुस्तक वेदों पर दोष न आवे कि उनमें अनेक परमेश्वर की पूजा पाई जाती है और दूसरे यह कि आगे को सब मनुष्यों को प्रकट हो जाये कि ऐसी-ऐसी व्यर्थ कुतर्क फिर खड़ी करके मेरा काल न खावें। क्योंकि इससे कई कठिन शंका तो मेरे बनाए ग्रन्थों के ही ठीक-ठीक मन लगाकर विचारने से निवारण हो सकती है। फिर मेरा सर्वहितकारी काल क्यों खोते हैं।'' इस भूमिका से 'भ्रान्ति निवारण' पुस्तिका का सम्पूर्ण विषय स्पष्ट हो जाता है।

'काशी' भारत की सांस्कृतिक राजधानी मानी जाती है। अनेक विद्वान् यहां सारस्वत साधना करते रहे हैं। जिस विद्वान ने यहां से मान्यता प्राप्त कर ली उसका सर्वत्र मान्य हुआ। स्वामी दयानन्द ने अनेक बार काशी जाकर वहां के विद्वानों को ललकारा तथा अवैदिक मतों के प्रति दुराग्रह ग्रस्त विद्वानों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी। शास्त्रार्थ में उनकी विजय भी हुई, यद्यपि तत्रस्थ जनों ने बड़ा कोलाहल किया। उन्हीं में राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने कुछ आक्षेप स्वामी विशुद्धानन्द की सम्मति लिखवाकर प्रकाशित किये। यदि इस पर स्वामी विशुद्धानन्द की सम्मति न होती तो स्वामी दयानन्द जी उत्तर न भी लिखते परन्तु उनकी सम्मति के कारण भ्रमों का उच्छेदन करना उचित जान 'भ्रमोच्छेदन' पुस्तक प्रकाशित किया। इसमें राजा जी के विभिन्न प्रश्नों का आक्षेपों का युक्ति युक्त उत्तर दिया गया है। संहिता भाग वेद हैं ब्राह्मण ग्रन्थ उनके भाष्य वा कर्मकाण्डपरक हैं। उपनिषदों में भी 'ईशावास्योपनिषद्' ही वेदभाग हैं तथा अन्य ईश्वर प्रोक्त्र नहीं है।

'भ्रमोच्छेदन' के पश्चात भी राजा जी ने कुछ आक्षेप किए जिनका उत्तर 'अनुभ्रमोच्छेदन' नामक पुस्तिका में दिया गया। स्वामी जी ने अन्त में विवेचन किया कि 'कोई किसी की निन्दा न करे, सत्य को माने और झूठ को छोड़ दें। मेरा यहां यह अभिप्राय नहीं है कि किसी की व्यर्थ निन्दा करूँ या मिथ्या स्तुति। हाँ! इतना कहता हूँ कि जितनी जिसकी समझ है उतनी ही कह और लिख सकता है। मेरी धार्मिक विद्वानों से प्रार्थना है कि जो कुछ अन्यथा लेख हुआ हो तो क्षमा करें और अपनी प्रशंसनीय विद्यायुक्त प्रज्ञा से उसको शुद्ध कर लेवें। इस पर सत्य-सत्य का परामर्श का प्रकाश कर आर्यों को सुभूषित करें।''

बालकों को सुव्यवहार की शिक्षा देने हेतु एक पुस्तिका स्वामी जी ने लिखी। इसका नाम व्यवहार भानु रखा। इसमें पण्डित, मूर्ख के लक्षण, विद्या प्राप्ति के उपाय, विद्यार्थी के गुण, शिक्षा की आवश्यकता, धर्म-अधर्म के गुण, शिक्षा की आवश्यकता, धर्म-अधर्म के लक्षण तथा अनेक दृष्टान्त देकर समझाया गया है। 'आर्योद्देश्य रत्नमाला' में 100 विषयों पर परिभाषा रूप में ईश्वर, धर्म, अधर्म, पाप, पुण्य, कर्म, कारण, अतिथि आदि को निरूपति किया गया है। यह लघु ग्रन्थ तथा स्वमन्तव्यामन्तव्य-प्रकाश का परिशिष्ट) वैदिक मत को समझने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। गोकरुणा निधि में पुशओं की रक्षा तथा उनसे उपकार लेने की बाबत लिखा गया है व 'गो कृष्यादि रक्षिणी सभा' बनाकर उन्नति की दिशा निर्दिष्ट की है। 'पंचमहाज्ञविधि' में आर्यों के दैनिक कर्त्तव्यों का प्रतिपादन है। इस प्रकार स्वामी जी के लघु ग्रन्थ उनके बृहत्काय सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका जैसे ग्रन्थों से महत्त्व में किञ्चिदपि कम नहीं है।

- प्रिंसिपल, डी. ए. वी., पब्लिक स्कूल,
विकासपुरी, नई दिल्ली

क्रान्तिकारी महापुरुष

स्वामी दयानन्द महान् सुधारक और प्रखर क्रान्तिकारी महापुरुष तो थे ही, साथ ही उनके हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फेंकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी। उनकी शिक्षाओं का हम सबके लिए भारी महत्त्व है, क्योंकि आज भी हमारे समाज में बहुत–सी विभेदकारी बातें विद्यमान हैं। उनका सामना महर्षि दयानन्द के बताये हुए मार्ग पर चलकर ही किया जा सकता है।

आध्यात्मिक व्यवस्था, सामाजिक कुरीतियां तथा राजनीतिक दासता देश को जकड़े हुए थी, तब महर्षि दयानन्द ने राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। सत्य, सामाजिक एकता और एक ईश्वर की आराधना का सन्देश उन्होंने दिया। उन्होंने शिक्षा एवं ईश्वर पूजा की स्वतन्त्रता सभी के लिए उपलब्ध करने पर बल दिया। भारत के संविधान में सामाजिक क्षेत्र के लिए अनेक व्यवस्थाएं महर्षि दयानन्द के उपेदशों से प्रेरणा लेकर ही की गई हैं।

- स्व० डॉ० एस० राधाकृष्णन्, भूतपूर्व राष्ट्रपति

भारतीय समाज के सामाजिक परिवर्तन और समाज सुधार में–

स्वामी दयानन्द का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

– डॉ० चन्द्रपाल सिंह

सामाजिक परिवर्तन और समाज सुधारः–

परिवर्तन समाज का एक अनिवार्य नियम है। आदिकाल से ही समाज में परिवर्तन होते रहे हैं, चाहे मनुष्य ने उन हो रहे परिवर्तनों के प्रति संवेदनशीलता दिखाई या नहीं। भारतीय समाज भी परिवर्तन के इस नियम से अछूता नहीं रहा, परन्तु शताब्दियों की राजनैतिक पराधीनता के कारण इन परिवर्तनों के प्रति उसमें कुछ असंवेदनशीलता आ गई। इसके परिणामस्वरूप भारतवासियों को दुर्बलता, दरिद्रता, हीनभावना तथा अन्य विकारों का शिकार बनना पड़ा। राजनैतिक, आर्थिक तथा धार्मिक उत्पीड़न एवं आत्मबोध के अभाव ने भारतीय समाज में बहुत–सी ऐसी कुण्ठाओं को जन्म दिया जिनका सहज उन्मूलन सम्भव नहीं था।

विदेशी शासन से, चाहे वह मुस्लिम रहा हो या ब्रिटिश, उत्पन्न पराजय–भाव ने भारत के विशाल हिन्दू समाज के धार्मिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों को अपूरणीय क्षति पहुँचायी। सहस्राब्दियों पूर्व के वैदिक, औपनिषदिक, रामायण तथा महाभारतकालीन समाज द्वारा दी गयी स्वस्थ चिन्तन व संस्कार युक्त परम्परा अतीत की वस्तु बनकर रह गयी जो केवल पुस्तकों तथा कथाओं तक सीमित रही। भारत की सामाजिक पृष्ठभूमि पर इसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ा तथा धर्म और समाज के बीच असन्तुलन उत्पन्न होने लगा। इस स्थिति का समाज के कुछ प्रभावशाली लोगों ने अनुचित रूप से उपयोग किया तथा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड, नैतिकता के नाम पर मिथ्या अन्धविश्वास, श्रम तथा कार्य–विभाजन के नाम पर विशेष वर्गों के शोषण का प्रचार किया। इसके परिणामस्वरूप समाज में सर्वत्र संकीर्णता, अनुदारता तथा जड़ता फैलने लगी जिसने बाल–विवाह, नारी–स्वाधीनता का अपहरण विधवाओं पर अत्याचार, ऊँच–नीच की भावना पर आधारित छूत–अछूत में विभाजन, बहु–विवाह प्रचलन, दलित व निम्न वर्ग पर अत्याचार, मांसाहार व मद्य–प्रयोग को धर्म व संस्कृति से जोड़ना आदि सामाजिक बुराईयों को जन्म दिया। ये सामाजिक बुराईयाँ व कुरीतियाँ भारतीय समाज में घुन की तरह लगीं तथा किसी समय के सुदृढ़, स्वस्थ व प्रगतिशील भारतीय समाज को इतना जर्जर व खोखला बना दिया कि वह विदेशी आक्रमण तथा परकीय अत्याचारों का सामना करने में असमर्थ हो गया। भारतीय समाज की इस अधोगति तथा सामाजिक विघटन के लिए बाह्य शक्तियों के साथ–साथ हिन्दू समाज में आये मिथ्या विश्वास, कुरीतियाँ व कुप्रथायें, रूढ़िग्रस्त व जड़ विश्वास भी जिम्मेदार थे! यह किसी समाज की वह अवस्था थी जहाँ उसमें परिवर्तन लाने के लिए बड़े स्तर पर समुदाय के मौलिक मूल्यों व सामाजिक संस्थाओं को प्रभावित करना आवश्यक हो गया था। समाज के पतन को रोकने के लिए समस्त समुदाय की जीवनधारा में परिवर्तन, व्यक्तियों एवं समूहों की आवश्यकताओं को जानकर उनका अध्ययन व विश्लेषण करके उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा उनके सर्वांगीण विकास में सहायता करना ही समाज–सुधार का उद्देश्य है तथा समाज–सुधार की एक वैज्ञानिक विधि है। स्वामी दयानन्द ने एक धर्म–संशोधक व धर्म–व्याख्याता के साथ–साथ एक समाजशास्त्री के रूप में भारतीय समाज की इस अवस्था को पढ़ा, जाना और उसे सुधारने का प्रयत्न किया।

समाज-सुधार क्या है?

समाज–सुधार सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख अभिकरण है जिससे समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, बुराईयों व कुरीतियों को समाप्त करने के लिए समाज को अज्ञानता व अन्धकार से बाहर निकालने का प्रयत्न किया जाता है। समाज–सुधार का मुख्य उद्देश्य समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना है, एक ऐसा परिवर्तन जिससे समुदाय के मौलिक मूल्य व संस्थाएं प्रभावित होती हैं। समाज–सुधार द्वारा समस्त समुदाय की जीवन–धारा में परिवर्तन लाने के लिए आन्दोलन चलाए जाते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य सामाजिक कुरीतियों व कुप्रथाओं को दूर कर सामाजिक व्यवस्था को वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल बनाना होता है जिससे समाज प्रगति कर सके।

स्वामी दयानन्द के समाज-सुधार में वैज्ञानिक आधार

भारतीय समाज में हो रहे नकारात्मक परिवर्तनों ने महर्षि दयानन्द को बहुत गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने भारतीय समाज के धार्मिक दृष्टिकोण के साथ–साथ उसकी सामाजिक परिस्थितियों तथा एक साधारण व्यक्ति की व्यथाओं व परेशानियों का वैज्ञानिक अन्वेषण किया। इसीलिए स्वामी जी द्वारा किये गये समाज–सुधार चाहे वह नारी–उत्थान के विषय में हो या हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों व कुप्रथाओं अथवा मूर्तिपूजा या कर्मकाण्डों का खण्डन हो, सभी वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसे गये। भारतीय समाज के पुनर्जागरण में स्वामी दयानन्द के योगदान में जहाँ धर्म–सुधार एक आधार था वहीं इस समाज व मनुष्य की सामाजिक मनःस्थितियों का वैज्ञानिक अध्ययन तथा सोच के द्वारा इसमें परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण प्रयत्न भी।

उन्नीसवीं सदी में ही भारतीय समाज की क्षति को रोकने के लिए स्वामी जी ने एक समाजशास्त्री की भूमिका निभाई तथा समाज को सशक्त बनाने का प्रयत्न किया। उनके समाज–सुधार–सम्बन्धी कार्य तत्वज्ञान और यथार्थता के सिद्धान्तों पर आधारित थे जिनमें मानव–समाज की छोटी से छोटी विकृति की ओर भी ध्यान दिया गया। शिवरात्रि के पर्व पर शिव प्रतिमा का चूहे द्वारा किये गये अपमान की एक साधारण प्रतीत होने वाली घटना ने न केवल स्वामी दयानन्द के जीवन को असाधारण मोड़ दिया अपितु भारत के धार्मिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक जगत् में क्रान्ति का सूत्रपात किया। स्वामी दयानन्द के हृदय में सुधारों की भावना का प्रारम्भ मूर्ति की सत्ता में अश्रद्धा होने से हुआ। यह ईश्वर–सम्बन्धी अशुद्ध विचारों के विषय में उनका पहला कुठाराघात था।

स्वामी जी के समाज–सुधार में एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे समाज में परिवर्तन लाने के लिए मनुष्य को अपनी बुद्धि, विवेकशक्ति तथा चिन्तन–प्रणाली का प्रयोग करने के लिए कहते थे तथा उसके

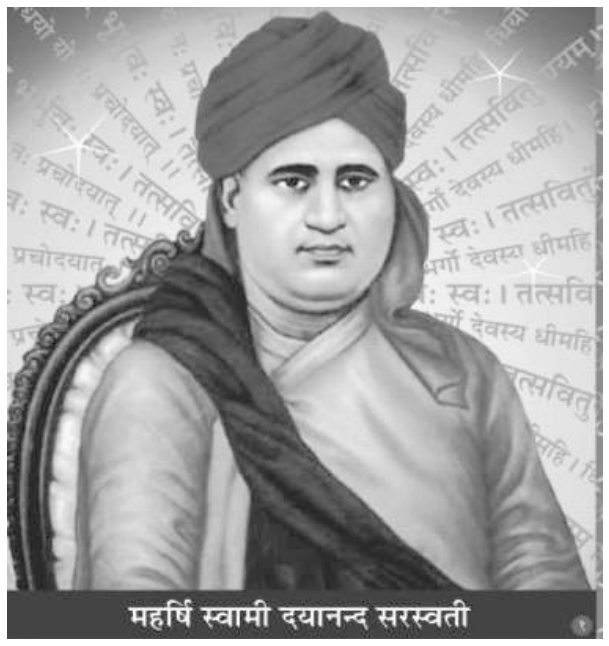

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

लिए उसे उचित वातावरण भी देने का प्रयत्न करते थे। यह उनके प्रगतिशील विचारों तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रमाण है। यहाँ मैं १ जुलाई १८७७ को प्रकाशित 'बिरादरे हिन्द' में स्वामी जी के विषय में छपे एक लेख को उद्धृत करना चाहता हूँ जिसमें उनके उदार, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील विचारों को प्रस्तुत किया गया है– '' ..... उनके विचार प्रायः उदार तथा अधिकांश विचार इस समय के विद्वतापूर्ण विचारों के अनुकूल हैं। मस्तिष्क उनका अत्यन्त प्रगतिशील प्रतीत होता है। इस व्यक्ति के हृदय में राष्ट्रीय सहानुभूति और राष्ट्रीय सुधार का बहुत बड़ा उत्साह स्पष्ट दिखाई देता है। धार्मिक सुधार की दृष्टि से यह व्यक्ति मूर्तिपूजा का बहुत बड़ा शत्रु है और उन लोगों में से है जो इन दिनों मूर्तिपूजा को जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं, इस व्यक्ति को इस समय का बहुत बड़ा मूर्तिभंजक कहें तो अनुचित न होगा। जहाँ तक धार्मिक सुधारों का प्रश्न है, ब्रह्म–समाज भी सिद्धान्त–रूप में मूर्तिपूजा को दूर करना और इस संसार में ईश्वरोपासना का प्रचार करना चाहता है। इसलिए उसका तो यह व्यक्ति एक देवदूत की भांति सिद्ध होगा। इसकी जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है। यह व्यक्ति केवल धार्मिक सुधार का ही अभिलाषी नहीं है, अपितु समस्त जातीय बुराईयों के सुधार को दृष्टि में रखता है, जैसे देश में फैल रहा बाल्यावस्था में विवाह आदि। वह स्त्रियों की शिक्षा और उनकी स्वतन्त्रता का विशेष रूप से इच्छुक है और उसकी यह भी सम्मति है कि जब तक उनमें शिक्षा न फैलेगी तब तक उन्हें अपनी कैद से छुटकारा प्राप्त न होगा, और तब तक इस देश में किसी स्पष्ट उन्नति की आशा करना व्यर्थ है। सारांश यह है कि जाति से अविद्या और पक्षपात को दूर करना, विद्या का प्रचार करना और सुदृढ़ राष्ट्रीय एकता उत्पन्न करना और उसे साधारण सभ्यता के रूप में लाकर एक श्रेष्ठ नमूना बनाने का यत्न करना, इस व्यक्ति का सामान्य और विशेष उद्देश्य है।''

– बाल-विवाह का वैज्ञानिक आधार पर विरोध

स्वामी जी के समाज–सुधार के कार्य उनके द्वारा समाज के गहरे अध्ययन पर आधारित थे। यह अध्ययन समाज की वास्तविक परिस्थितियों अर्थात् सत्य पर आधारित था और सत्य के विषय में उनके विचार बहुत स्पष्ट थे। अपनी प्रमुख कृति 'सत्यार्थप्रकाश' में स्वामी जी ने सत्य के विषय में कहा है कि जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना मेरे इस ग्रन्थ का प्रयोजन है। उन्होंने यह भी कहा है कि वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान पर असत्य और असत्य के स्थान पर सत्य का प्रकाशन करता है। परन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। बाल–विवाह जैसी कुप्रथा का विरोध उन्होंने उस समय की सामाजिक स्थितियों की यथार्थता को स्वीकारते हुए किया। उन्हें भली–भाँति ज्ञात था कि समाज का एक बड़ा वर्ग इस प्रथा के विरोध को उचित नहीं मानेगा, परन्तु मनुष्य के विकास में बाधक किसी भी प्रकार की प्रथा को वे स्वीकार नहीं कर सकते थे, क्योंकि वह सत्य के मार्ग में बाधक थी और मनुष्य के शरीर की संरचना और उसका विकास स्वामी दयानन्द ने आयुर्वेद के ग्रन्थों–चरक आदि से वैज्ञानिक आधार पर यह जान लिया था कि किस आयु में स्त्री, पुरुष में परिपक्वता आती है। इसलिए उनका दृढ़ विश्वास था कि बाल–विवाह जैसी कुप्रथायें स्वस्थ मनुष्य और स्वस्थ समाज के विकास में बाधक हैं। बाल–विवाह का विरोध करने के पीछे एक वैज्ञानिक आधार यह भी था कि मनुष्य में प्रजनन–क्षमता तथा प्रक्रिया यौवनावस्था (१२ वर्ष से १६ वर्ष) में चरम सीमा पर होती है और इस अवस्था में 'मनुष्य मानसिक व शारीरिक रूप से पूर्ण विकसित नहीं होता इसलिए उन्होंने स्त्री और पुरुष के विवाह की आयु उनके पूर्ण रूप से विकसित और मानसिक व शारीरिक रूप से परिपक्व हो जाने पर निश्चित की।

– अर्थशास्त्र पर आधारित गो-रक्षा

स्वामी दयानन्द के समाज–सुधार में गोधन की रक्षा तथा गोहत्या के विरुद्ध संघर्ष भी बहुत महत्वपूर्ण है। गोधन को स्वामी जी मनुष्य–जाति के लिए बहुत उपयोगी और जीवनदायी मानते थे। इसे सिद्ध करने के लिए उन्होंने गोधन के अर्थशास्त्र को समझाया। यह भी उनके समाज–सुधार का एक वैज्ञानिक आधार ही था जिसमें उन्होंने साधारण मनुष्य की आवश्यकता को ध्यान में रखकर एक सन्तुलित समाज के विकास का मार्ग बनाया। यह उस समय का एक आवश्यक सुधार–क्षेत्र था जिसमें समाज की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे अपने संसाधानों को सुरक्षित रखने और विकसित करने के लिए प्रेरित करना आपश्यक था।

– समग्र सुधार का आह्वान

स्वामी दयानन्द के चिन्तन और कार्यों में सतत गतिशीलता तथा प्रगतिशील विचारधारा स्पष्टरूप से दिखाई देती है। धार्मिक क्षेत्र व सामाजिक क्षेत्र के साथ–साथ उन्होंने राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में भी अपने समाकालीन समाज–सुधारकों की तुलना में अधिक प्रगतिशील विचार दिये। धार्मिक क्षेत्र में परिवर्तन लाना तो उनका लक्ष्य था ही, स्वदेश की हीन अवस्था से भी वे पूरी तरह परिचित थे। उनकी यह धारणा बन चुकी थी कि अंग्रेजी शासन में प्रचलित न्याय–प्रणाली दोषपूर्ण है। उनका दृढ़ विश्वास था कि प्राचीन काल में प्रचलित पंचायत–प्रणाली, जिसमें ग्राम को इकाई मानकर वहां निवासियों के आपसी वाद–विवादों को मिल बैठकर सुलझा लिया जाता है, ग्राम–पंचायत–व्यवस्था भारत जैसे ग्रामीण प्रधान देश के लिए अनुकूल है। ब्रिटिश राज्य की समाप्ति के पश्चात् भारत में स्थानीय स्तर पर जो पंचायत राज्य स्थापित किया गया उसका आधार वही प्राचीन पंचायत राज्य प्रणाली है जिसे स्वामी जी भारतीय स्थानीय स्वशासन के लिए उचित मानते थे। यह स्वामी दयानन्द का भारतीय समाज के विषय में गहन चिन्तन का प्रतीक है और भारतीय समाज की परिस्थितियों का एक वैज्ञानिक मूल्यांकन। संक्षेप में, महर्षि दयानन्द की विचारधारा एक प्रगतिशील विचारधारा थी और वे सत्य के अन्वेषक थे। उनका दृष्टिकोण व्यापक था, वे जीवन और समाज की पूर्ण व्याख्या करना चाहते थे और अपनी विचार क्रान्ति में सबको साथ लेकर चलना उनका ध्येय था, यही समाज–सुधार में महत्वपूर्ण तथा वैज्ञानिक तथ्य हैं जो स्वामी दयानन्द के समाज–सुधार में प्रमुख थे। अन्त में डॉ० सत्यप्रकाश सरस्वती द्वारा उद्धृत ये शब्द स्वामी जी के व्यक्तित्व व वैज्ञानिक सोच को और अधिक स्पष्ट करते हैं– ''यदि कोई दयानन्द के दृष्टिकोण को समझले तो यदि वह ईसाई है तो और भी अधिक अच्छा और ईमानदार ईसाई बन सकता है; हिन्दू है तो अच्छा हिन्दू बन सकता है; जैन, मुसलमान, सिक्ख, पारसी है तो अच्छा जैन, मुसलमान, सिक्ख और पारसी बन सकता है; यदि वह राजनीतिक और राष्ट्रवादी है तो दयानन्द के दृष्टिकोण को समझ लेने पर वह अपने क्षेत्र में अच्छा कार्यकर्त्ता बन सकता है, यदि वह समाजवादी और साम्यवादी है तो वह अच्छा समाजवादी या साम्यवादी बन सकता है; ब्राह्मण अच्छा ब्राह्मण, शूद्र अच्छा शूद्र बन सकता है।''

-एम.टी.एच.-७, विश्वविद्यालय परिसर,

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र-१३६११९

मेरे सच्चे राजनैतिक गुरु

बहुत से लोग महर्षि दयानन्द को सामाजिक और धार्मिक सुधारक कहते हैं, परन्तु मेरी दृष्टि में तो वे सच्चे राजनैतिक थे। उन्होंने ही इस देश में सर्वप्रथम स्पष्ट घोषणा की कि – ''चाहे कितना भी विदेशी राज्य अच्छा क्यों न हो, तो भी वह अपने स्वराज्य के बराबर नहीं हो सकता।'' ४० वर्षों से कांग्रेस का जो कार्यक्रम रहा है, वह सब कार्यक्रम आज से ६० वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द ने देश के सामने रखा था। सारे देश में एक भाषा, खादी, स्वदेश–प्रचार, पंचायतों की स्थापना, दलितोद्धार, राष्ट्रीय और सामाजिक एकता, उत्कट देशाभिमान और स्वराज्य की घोषणा, यह सब महर्षि दयानन्द ने देश को दिया है। वर्तमान कांग्रेस का प्रत्येक अंश भगवान् दयानन्द ने ही बनाया है। सचमुच हम भाग्यहीन थे। यदि ६० वर्ष पहले इस कार्यक्रम को समझ कर आचरण किया होता तो भारतवर्ष कब का स्वतन्त्र हो गया होता।

''मैं ऋषि दयानन्द को अपना राजनैतिक गुरु मानता हूँ। मेरी दृष्टि में तो वह महान् विपल्ववादी नेता और राष्ट्र विधायक थे।''

- विट्ठल भाई पटेल

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

जन चेतना यात्रा के संदर्भ में कैथल के आर्य कार्यकर्ताओं ने दिखाया अभूतपूर्व उत्साह

14 फरवरी को कैथल में पहुंचेगी आर्य समाज की जन चेतना यात्रा

कैथल (3 फरवरी, 2020) :– विश्व की समस्त आर्य समाजों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में आर्य समाज,करनाल रोड, कैथल में जिले के आर्य समाजी कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित की गई। बैठक का शुभारंभ ईश्वर स्तुति प्रार्थना के मंत्रों से किया गया। बैठक में आर्य समाज की 12 फरवरी 2020 से शुरू होने वाली जन जागरण यात्रा की तैयारियों पर चर्चा की गई। यात्रा 14 फरवरी को कैथल जिले में प्रवेश करेगी तथा आर्य समाज कैथल में ही रात्रि पड़ाव रहेगा।

बैठक की अध्यक्षता करते हुये स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर कहा कि जनता के दिलों में गाय के प्रति संवेदना उत्पन्न करने व उसकी रक्षा के लिए प्रेरित करने तथा सरकार को गौहत्या व गौमांस के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए बाध्य करने के लिए एवं समाज में निरन्तर बढ़ती नशाखोरी, युवा पीढ़ी के चारित्रिक पतन व अश्लीलता तथा कन्या भ्रूण हत्या एवं महिलाओं पर हो रहे अत्याचार तथा धार्मिक अंधविश्वास आदि कुरीतियों के विरुद्ध जागृति पैदा करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में जन जाग्रति आंदोलन तेज किया जाएगा।

यात्रा के जिला संयोजक सत्यवीर आर्य व सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के जिला मंत्री श्यामलाल आर्य ने संयुक्त रूप से बताया कि हरियाणा में 12 फरवरी, 2020 से 18 फरवरी, 2020 (महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस) तक जन चेतना यात्रा का भव्य आयोजन किया जा जाएगा। यात्रा दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सोनीपत से प्रारम्भ होगी तथा समापन अनाज मण्डी,लोहारू जिला–भिवानी में होगा। यात्रा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री बिरजानन्द एडवोकेट जी, स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी, स्वामी नित्यानन्द सरस्वती जी, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या व राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य आदि जन सभाओं को सम्बोधित करेंगे। यात्रा का संयोजन प्रदेशाध्यक्ष दीक्षेन्द्र आर्य करेंगे। इनके अतिरिक्त चौ.हरिसिंह सैनी हिसार पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार,श्री विशाल मलिक, प्रतिष्ठित समाजसेवी एवं युवा उद्यमी, महंत चरणदास जी,भिवानी, आचार्य हरिदत्त गुरुकुल लाढोत आदि का भी सान्निध्य प्राप्त होगा। इस बैठक में आर्य समाज करनाल रोड कैथल के प्रधान प्रीतिपाल सिंह, मंत्री हरिकेश राविश,आर्य समाज शहर के मंत्री देवव्रत खरबंदा, अमित गुप्ता, सत्यवान मलिक, महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती रजनी आर्या, जयश्री आर्या, कृष्ण शास्त्री ने भी अपने विचार रखे।

कैथल के किठाना, तारागढ़, देवबन, तितरम, चंदाना, गुहणा, छौत, पढ़ला, कैथल, बालू, बाता, कलायत, कैलरम, शिमला आदि ग्रामों में यात्रा के दौरान विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जन जागृति का कार्य किया जायेगा।

श्री श्यामलाल जी ने बताया कि इस जन चेतना यात्रा में आर्य समाज के लगभग 30 सन्यासियों के अतिरिक्त आर्य समाज के नेता तथा बेटी बचाओ अभियान की कार्यकर्ता शामिल रहेंगी।

आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती जी को मातृ शोक

आर्य जगत के सन्यासी एवं प्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी सम्पूर्णानंद सरस्वती जी की माता श्रीमती चमेली देवी जी का देहांत 3 फरवरी 2020 को हो गया है। माता जी 72 वर्ष की थी। उनका अंतिम संस्कार वैदिक विधि से 4 फरवरी 2020 को पैतृक गांव चोरकारसा (करनाल) में हुआ।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने अर्थी को कंधा दिया। माता चमेली देवी की अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न की गई। गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवं आर्य पुरोहितों ने वेद मंत्रों के द्वारा विशुद्ध घी एवं सामग्री की प्रचुर मात्रा से आहुतियाँ प्रदान कर अन्त्येष्टि को एक महत्त्वपूर्ण कार्य का रूप प्रदान किया। सैंकड़ों लोगों ने माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

अन्त्येष्टि के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने स्वर्गीया माता चमेली देवी जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वह एक महान माता थीं जिन्होंने देश और समाज की सेवा के लिए अपने ज्येष्ठ पुत्र स्वामी सम्पूर्णानन्द को संन्यासी बनाकर सौंप दिया। पूज्या माता जी एक धर्मपारायणा और संकल्पशील विचारों से ओत–प्रोत थीं, उन्होंने एक तेजस्वी संन्यासी आर्य जगत को देकर आर्य समाज के कार्य में अपना सम्पूर्ण योगदान दिया। स्वामी सम्पूर्णानन्द जी देश–विदेश में वैदिक धर्म की दुंदुभी बजा रहे हैं। उनका तेजस्वी व्यक्तित्व अनायास ही लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने वाला है। उनको देश और समाज की सेवा में समर्पित होने की प्रेरणा उन्हें पूज्य माता जी से मिली। ऐसी दिव्यात्मा का निधन निःसंदेह समाज की अपूर्णीय क्षति है। उनका व्यक्तित्व बड़ा प्रेरणादायक था। उनकी असामयिक मृत्यु से निश्चित ही दुःख होना स्वाभाविक है, किन्तु ईश्वरीय व्यवस्था में हम सभी नतमस्तक हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रभु से प्रार्थना की और शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना अर्पित की। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी बलेश्वरानन्द जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, डॉ. राम भगत लांग्या आई.ए.एस., श्री लाजपत राय चौधरी, श्री शांति प्रकाश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान प्रो. आनन्द सिंह आर्य, आर्य समाज घरोण्डा के प्रधान श्री जय प्रकाश आर्य तथा मंत्री श्री दिलबाग सिंह आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

माता जी की श्रद्धांजलि सभा 9 फरवरी 2020 को दोपहर 1 से 2 बजे तक, चोरकारसा में आयोजित की जायेगी।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।